SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पंकज मित्र की कहानियों में अभिव्यक्त सांप्रदायिक राजनीति

सुमित कुमार, शोधार्थी, हिंदी अध्ययन केन्द्र,
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सुमित कुमार, शोधार्थी, हिंदी अध्ययन केन्द्र
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर, गुजरात, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/06/2021
Revised on : -----
Accepted on : 22/06/2021
Plagiarism : 00% on 15/06/2021

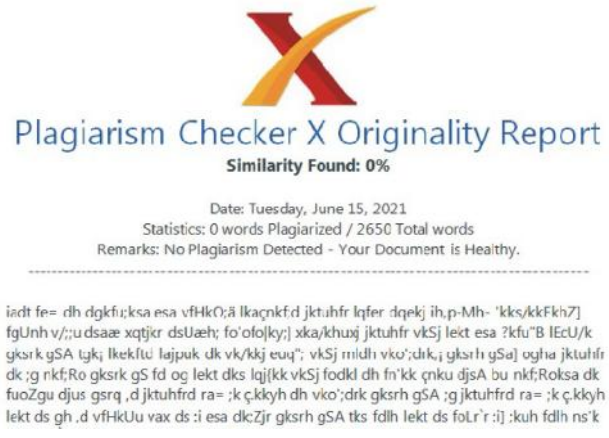
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Tuesday, June 15, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 2650 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

iadt fe= dh dgkfu;ksa esa vfHkO;ä lkaçnkf;d jktuhfr lqfer dqekj ih.p-Mh- 'kks/kkFkh7]
fgUnh v/;;u dsaæ xqtjkr dsUæh; fo'ofo|ky;] xka/khuxj jktuhfr vkSj lekt esa ?kfu"B lEcU/k
gksrk gSA tgk¡ lkekftd lajpuk dk vk/kkj euq"; vkSj mldh vko';drk,¡ gksrh gSa] ogha jktuhfr
dk ;g rkf;Ro gksrk gS fd og lekt dks lqj{kk vkSj fodkl dh fn'kk çnku djsA bu nkf;Roksa dk
fuoZgu djus gsrq ,d jktuhfrd ra= ;k ç.kkyh dh vko';drk gksrh gSA ;g jktuhfrd ra= ;k ç.kkyh
lekt ds gh ,d vfHkUu vax ds :i esa dkcZjr gksrh gSA tks fdlh lekt ds foLr`r :i] ;kuh fdlh ns'k

शोध सार

राजनीति और समाज में उस वक्त टकराहट या संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है जब जिन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सरकार का गठन किया जाता है, वह पूरा नहीं हो पाता। व्यवहारिक तौर पर बात की जाए तो भारत में चुनाव के समय नेतागण तरह–तरह के मन लुभावन वादे तो करते हैं, लेकिन जीतने के बाद वह छद्म साबित होते हैं। सेवाभाव निहित स्वार्थ में परिवर्तित हो जाता है। इस निहित स्वार्थ की पूर्ति हेतु चुनाव जीतना किसी नेता या पार्टी के लिए इतना अहम बन जाता है कि सांप्रदायिक उन्माद और हिंसा का प्रश्रय लेते हुए, वे मानवीय संवेदनाओं को क्षत–विक्षत तक करने में भी नहीं हिचकिचाते। उनका बस एक ही उद्देश्य हो जाता है और वह है, सत्ता हथियाना। ऐसे में धर्म भी राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति का एक उपकरण मात्र ही नजर आता है। भारत में 1990 के बाद अर्थात् भूमंडलोत्तर परिदृश्य में सांप्रदायिक राजनीति ने समाज को अत्यधिक क्षति पहुँचायी है, जिसका यथार्थपरक चित्रण पंकज मित्र की कहानियों में मिलता है। प्रस्तुत शोध आलेख में कहानियों के उदाहरणों के द्वारा इसके कारणों और प्रभावों का विश्लेषण किया जा रहा है।

मुख्य शब्द

सांप्रदायिक राजनीति, धार्मिक उन्माद, हिंसा.

राजनीति और समाज में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जहाँ सामाजिक संरचना का आधार मनुष्य और उसकी आवश्यकताएँ होती हैं, वहीं राजनीति का यह दायित्व होता है कि वह समाज को सुरक्षा और विकास की दिशा प्रदान करे। इन दायित्वों का निर्वहन करने हेतु एक राजनीतिक तंत्र या प्रणाली की आवश्यकता होती है। यह राजनीतिक तंत्र या प्रणाली समाज के ही एक अभिन्न अंग के रूप में कार्यरत् होती है। जो किसी समाज के विस्तृत रूप, यानी किसी देश की स्वायत्तता और संप्रभुता

को कायम रखते हुए अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रतिबद्ध होती है। भारत में आजादी मिलने के बाद लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाया गया। लोकतांत्रिक प्रणाली की सबसे बड़ी खूबी है कि इसमें जनता ही सर्वेसर्वा होती है, अर्थात् स्वयं जनता ही शासक की भूमिका में भी होती है। संवैधानिक प्रक्रिया के अंतर्गत एक निश्चित समय सीमा के लिए जनता के प्रतिनिधि चुने जाते हैं और सरकार के रूप में सेवारत होते हैं। परन्तु राजनीति और समाज में उस वक्त टकराहट या संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है जब, जिन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सरकार का गठन किया जाता है, वह पूरा नहीं हो पाता। व्यवहारिक तौर पर बात की जाए तो भारत में चुनाव के समय नेतागण तरह–तरह के मन लुभावन वादे तो करते हैं, लेकिन जीतने के बाद वह छद्म साबित होते हैं। सेवाभाव निहित स्वार्थ में परिवर्तित हो जाता है। इस निहित स्वार्थ की पूर्ति हेतु चुनाव जीतना किसी नेता या पार्टी के लिए इतना अहम बन जाता है कि सांप्रदायिक उन्माद और हिंसा का प्रश्रय लेते हुए, वे मानवीय संवेदनाओं को क्षत–विक्षत तक करने में भी नहीं हिचकिचाते। उनका बस एक ही उद्देश्य हो जाता है, और वह है सत्ता हथियाना। ऐसे में धर्म भी राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति का एक उपकरण मात्र ही नजर आता है। भारत में 1990 के बाद अर्थात् भूमंडलोत्तर परिदृश्य में सांप्रदायिक राजनीति ने समाज को अत्यधिक क्षति पहुँचायी है। जिसका यथार्थपरक चित्रण पंकज मित्र की कहानियों में मिलता है। आगे बढ़ने से पूर्व यहाँ कथाकार का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत हैः

भूमंडलीकरण के बाद आई कथाकारों की नई पीढ़ी में पंकज मित्र (जन्म–1965) का नाम महत्त्वपूर्ण है। वे मूलतः झारखंड के रहने वाले हैं तथा वर्तमान में आकाशवाणी, रांची में कार्यक्रम अधिशासी के रूप में कार्यरत हैं।उनकी कहानियाँ भारत में भूमंडलीकरण के बाद के हुए परिवर्तनों को बड़ी ही सूक्ष्मता से दर्शाती हैं। आंचलिकता का पुट लिए हुए उनकी कहानियों में समग्र भारत की झलक मिलती है। उनके अबतक कुल चार कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं– 'क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ' (2004), 'हुडुकलुल्लु' (2008), 'जिद्दी रेडियो'(2014) और 'बाशिंदा / तीसरी दुनिया' (2017)। इन संग्रहों में कुल 37 कहानियाँ संकलित हैं।

साधारण तौर पर यह देखा जाता है कि सांप्रदायिकता के पीछे धर्म केंद्र में होता है। अतः प्रश्न उठता है कि क्या सांप्रदायिक दंगे सिर्फ धार्मिक मतभेदों के कारण होते हैं? विगत् कुछ वर्षों में हुए दंगों के कारणों की गहराई से खोज करने पर पता चलता है कि उसके पीछे राजनीतिक कारण थे। यदि कहा जाए कि दंगे जितने धार्मिक मतभेद के कारण नहीं होते, उससे कहीं अधिक राजनीतिक कारणों से होते हैं तो उचित ही होगा। भूमंडलीकरण के बाद जिस तरह सांप्रदायिक घटनाएँ बढ़ी हैं उससे प्रतीत होता है कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में दंगे केवल और केवल कुर्सी पाने के लिए प्रायोजित किए जाते हैं। कहानी 'अफसाना प्रदूषण का ...' में इसका स्पष्ट चित्रण मिलाता है,

"पर उस दिन कोई त्योहार न था लेकिन बढ़ गई थी जवानों की आमदरफ्त– एक कदीम इमारत के मिस्मार होने की आवाज पूरे मुल्क में गूंज उठी थी लेकिन जो 'आह' हर जगह थी और बहुतों को सुनाई नहीं दे रही थी, वह थी एक भरोसे के टूटने की। कुछ लीडरान के कंधों पर चढ़ी हुई लीडरानियां अपने अश्लील उल्लास प्रदर्शन से इस आह को और भी गहरी, और भी असरदार बना रही थीं।"[1]

लेखक ने यहाँ जिस 'कदीम इमारत के मिस्मार' होने की बात कही है, वह निस्संदेह बाबरी मस्जिद विध्वंस की ही घटना है। गौरतलब है कि भारत में भूमंडलीकरण (शुरुआत) के कुछ ही दिनों बात हुए बाबरी मस्जिद विध्वंस की घटना और उससे फैले सांप्रदायिक उन्माद से पूरा देश सहम कर रह गया था। इस घटना के पीछे स्पष्टतः कट्टर हिन्दूवादी संगठनों और एक खास राजनीतिक पार्टी का हाथ था। इस सम्बन्ध में रजनी कोठारी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद और भारतीय जनता पार्टी को मुख्य रूप से आरोपित करते हुए लिखते हैं, "इन्हीं संगठनों ने रथ यात्राओं और कार सेवाओं के जरिये आम हिन्दुओं, खासकर महिलाओं और युवकों को 'राम' मंदिर के निर्माण और अंत में छः दिसम्बर के तांडव यानी बाबरी मस्जिद के विध्वंस के लिए गोलबंद किया।"[2] उस घटना के बाद सांप्रदायिक राजनीति ने जिस तरह अपनी जड़ें मजबूत की, उससे एक लोकतांत्रिक, समता मूलक समाज को खतरा है। इस खतरे के लिए जिम्मेदार वे नेतागण हैं जो सत्ता के लिए सांप्रदायिक राजनीति का खेल खेलते हैं।

उपर्युक्त उद्धरण में लेखक (पंकज मित्र) ने जिन लीडरान (नेताओं) की चर्चा की है, वे किसी एक पक्ष के नहीं अपितु दोनों पक्षों से सम्बन्धित हो सकते हैं। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों में एक खौफ और भय का वातावरण फैला। खासकर मुस्लिमों में असुरक्षा की भावना पनपी। अतः मुस्लिमों के हितैषी नेताओं में से कुछ तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया स्वरूप और कुछ स्वार्थ पूर्ति हेतु दंगाई आग में घी डालने का काम करते रहे, जिससे उनका वर्चस्व उनके समुदाय पर बना रहे। दोनों पक्षों ने नफरत की आग को इस कदर भड़काया कि जिसमें इंसानियत भी जल गई, "चिंगारी को हवा दे–देकर आग का रूप दिया गया और फिर आग कहाँ देख पाती है कुछ, क्योंकि आग की आँखें कहाँ होती है, किसी को मालूम नहीं। लेकिन आँख वालों ने गिन–गिनकर, चुन–चुनकर, निशान–विशान लगाकर आग को बताये उसके शिकार के ठिकाने, और रात में ही वह जादुई करतब किये इसने कि एक खास कौम के मकानों, ठिकानों, दुकानों को ही जलाया। फिर इस कौम के पहरूए भी कहाँ खामोश रहते। आखिर मजहबी फर्ज की बात थी। निकल पड़े पुराने छुरे, जंगआलूदा तलवारें, पाइप बम, पेट्रोल बम जैसे कदीमी हथियार और इन्हीं के जलाल से सुबह तक गली में पड़ी थीं तीन लाशें....।"[3] वास्तव में, इन सब घटनाओं को भड़काने के पीछे चुनावी रणनीति होती है जिसके तहत एक खास समुदाय को वोट बैंक की तरह देखा जाता है और वोट का ध्रुवीकरण किया जाता है। एक सुनियोजित तरीके से पूरी प्रक्रिया को अंजाम दिया जाता है। कहानी 'अफसाना प्रदूषण का..' इस यथार्थ को परत दर परत खोलती है और इस सांप्रदायिक राजनीति के प्रभाव को भी उजागर करती है। एक कस्बे में हिन्दू और मुस्लिम बड़े ही सौहार्द पूर्ण रूप से रहते हैं। यहाँ तक की पर्व त्योहार भी साथ–साथ मनाते हैं, "तब अब्बा के हाथों में ताकत भी भरपूर थी और काठी भी थी मजबूत। रमनौमी (रामनवमी) में लाठी और बाना घुनने (भांजने) में उनसे कोई पार पाता था या बराबरी पर रहता तो सिर्फ बजरंगी लाल। रमनौमी में और मुहर्रम में दोनों मिलकर चक्करघिन्नी खाते हुए लाठी धुनते तो भीड़ मंत्रमुग्ध होकर देखती रहती।"[4] परन्तु इस सौहार्द भरे वातावरण को नेता, पुलिस और धर्मगुरू आदि मिलकर भंग कर देते हैं। वैसे तो यह एक कस्बे की कहानी है पर इसमें पूरे देश की झलक मिलती है। कहानी के अनुसार जो राजनीतिक षडयंत्र रचा जाता है उसमें धर्म को केंद्र में रखा जाता है। हिन्दुओं में एक सांस्कृतिक परंपरा रही है कि रामनवमी के दिन झाँकी निकलती है, जिसमें भक्तगण राम–सीता, लक्ष्मण, हनुमान आदि विभिन्न पात्रों का वेश बनाते हैं और उसे सभी जगह घुमाया जाता है, जिससे प्रेम और भक्ति भावना का संचार हो सके। लेकिन षडयंत्रकर्ता उस झाँकी को जानबूझकर मुस्लिम मोहल्ले से इसलिए घुमाना चाहते हैं क्योंकि उससे धर्म के नाम पर वैमनस्य उत्पन्न हो सके। हालाँकि इसमें कुछ प्रशासनिक अधिकारी जो ईमानदार हैं वो रोकने के लिए कोशिश भी करते हैं, "ये बास्टर्ड्स हिन्दू–मुसलमान रामनवमी के जुलूस को लेकर हमेशा टेंशन पैदा करते हैं तो, व्हाय नॉट चेंज द रूट। वर्षों की प्रॉब्लम मिनटों में सॉल्वड। चीफ सेक्रेटरी तक जान जाएँगे हम कितने एफिशिएंट हैं। आखिर आई.ए.एस. का दिमाग है।"[5] लेकिन प्रशासन के इस फैसले की खबर जैसे ही अखबार में आई सभी पार्टियाँ अपनी राजनीतिक रोटी सेंकने लगी अखबारों के माध्यम से ही, "अपने–अपने रंगों के हिसाब से खबरों में रंग भरने लगे– कोई नारंगी रंग भर रहा था तो कोई हरा, कोई लाल तो कोई नीला।"[6] लेखक के इन शब्दों में प्रतीक छिपे हैं। दरअसल, नारंगी रंग हिंदुत्व का राग अलापने वालों की पहचान कराता है जिसमें भारतीय जनता पार्टी का नाम विशेष रूप से जोड़ा जा सकता है। वहीं हरा रंग मुस्लिमों से ज्यादा जुड़ता हुआ प्रतीत होता है और लाल रंग कम्युनिस्टों का प्रतीक है एवं नीला रंग अम्बेडकरवादी विचारधारा से जुड़े लोगों के प्रतीक स्वरूप है। इन सबके बीच बाबा प्रचंडदास झाँकी को उसी रास्ते से निकालने के लिए धरना देते हैं, "रास्ता वही रहेगा, नहीं तो मैं अन्न–जल ग्रहण करना त्याग दूंगा और त्याग दूंगा उत्सर्जन भी करना। अन्न–जल तक तो ठीक बात थी, लेकिन उत्सर्जनविहीन अवस्था तो बड़ी ही कष्टकारक थी, खासकर बाबा के आसपास रहने वाले धर्मधुरीण शिष्यों एवं प्रशंसकों के लिए जिसमें शामिल थेः देशी शराब की फैक्ट्री के मालिक, कोयले के बड़े तस्कर, छुटभैये नेतागण, एकाध बड़े होनेवाले नेता भी।"[7] अंत में प्रशासन को हारकर रास्ता बदलने का फैसला वापस लेना पड़ता है। ये सिर्फ कहानी काल्पनिकता नहीं है बल्कि ये यथार्थ का प्रत्यक्ष उदाहरण है। वास्तव में ऐसे कई मामले आए हैं जिसमें जानबूझकर झाँकी के बहाने लोगों को उकसाना और कुछ ऐसी हिंसात्मक घटनाओं को अंजाम दिया जाता है जिससे लोगों को दो भागों में बाँटा जा सके। उपर्युक्त उद्धरण में बाबा के जिन शिष्यों की बात की गई है उन सभी की शह पर ही सांप्रदायिक उन्माद फैलाया जाता है,

जिससे नेताओं को सत्ता और उनके साथियों को इससे फायदा पहुँचता है। सांप्रदायिक राजनीति सौहार्द के सौन्दर्य को न सिर्फ प्रभावित कर रही है बल्कि अपने मनसूबों को कामयाब भी कर पा रही है, "बाबा प्रचंड दास ने ठोस–द्रव–गैस बहुतायत में उत्सर्जित भी किए, जुलूस का पुराना रास्ता भी कायम रहा, मटियाले साहब को चीफ सक्रेटरी की डांट भी पड़ी, उनका तबादला भी हुआ, जुलूस के दौरान भक्तों ने दुगुने–तिगुने उत्साह से लाठियां भी भांजी, दारू भी दुगुनी–तिगुनी मात्रा में पी गई, उसी अनुपात में चंदे भी उगाहे गए, कई विधायक और एक सांसद भी धर्मरथ पर सवार होकर धर्म का जयघोष करते हुए विधानसभा तथा संसद की तरफ कूच कर गए।"[8] इस तरह सांप्रदायिक राजनीति करने वालों के मनसूबे तो सफल हो जाते हैं, लेकिन उसका दंश आम लोगों को झेलना पड़ता है।

सांप्रदायिक भावना को भड़काने में रंग किस कदर इस्तेमाल किए जाते हैं, उसका उदाहरण कहानी 'हुडुकलुल्लु' में मिलता है, "एक दिन शर्फुनिया को किसी गली में खींच लिया गया था जब वह बदरूचा से पैसे लेकर सौ ग्राम सरसों तेल खरीदकर लौट रही थी। शक काफिरों के लड़कों पर जाना ही था क्योंकि उसकी छातियों पर केसरिया तिकोना झंडा रखा था जब वह बेहोश पाई गई थी। लेकिन कुछ लोगों ने जमलवा, तौफीकवा वगैरह को भी शर्फुनिया के पीछे जाते देखा था।"[9] यहाँ स्पष्टतः देखा जा सकता है कि केसरिया रंग का झंडा हिन्दुओं के होने का प्रमाण है पर जिन लड़कों के शर्फुनिया के पीछे जाने का जिक्र किया गया है वे तो मुसलमान थे, अतः खुद के कौम की लड़की पर बलात्कार कर दूसरे कौम यानी हिन्दुओं पर बलात्कार का ठीकरा फोर दिया जाता है। इस तरह के सांप्रदायिक उन्माद में सिर्फ हैवानियत ही नजर आती है जिसका कोई रंग या मजहब नहीं होता।आगे कहानी में इसके पीछे का कारण चुनावी यानी वोटों का ध्रुवीकरण दिखाया गया है, "चुनावी नतीजों ने किसी को नहीं चौंकाया हालाँकि सभी पार्टियों ने पुरजोर कोशिश की थी इस फसाद को भुनाने की।"[10]

एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सांप्रदायिक राजनीति के लिए सिर्फ एक पार्टी जिम्मेदार नहीं है बल्कि जिस भी पार्टी को जहाँ भी सांप्रदायिक राजनीति से फायदा होता है वे उससे लाभ उठाते हैं। यदि 2002 में हुए गोधरा कांड के बाद गुजरात दंगे की बात की जाए तो उसमें भारतीय जनता पार्टी का हाथ बताया जाता है। उस वक्त वहाँ उसी की सरकार थी और वह उस दंगे को रोक पाने में न सिर्फ नाकाम रही थी बल्कि आरोप लगाया जाता है कि उस दंगे की आग भड़काने के लिए भी वही जिम्मेदार है। अरुंधति रॉय लिखती हैं, "गुजरात देश का अकेला ऐसा बड़ा राज्य है, जहाँ पिछले कुछ वर्षों से भाजपा की सरकार है। वह ऐसी पैट्री डिश (बैक्टीरिया सम्बन्धित प्रयोग के लिए काम आनेवाली आधी ढकी तश्तरी) बन गया है जिसमें की हिन्दू फासीवाद व्यापक राजनैतिक प्रयोग साधने में लगा है। मार्च 2002 में इन प्रारम्भिक नतीजों का सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया। गोधरा की हिंसा के कुछ ही घंटों के भीतर मुस्लिम समुदाय के खिलाफ बहुत सावधानी से तैयार और सरकार नियोजित हिंसा (प्रोग्राम) शुरू की गई सरकारी तौर पर मृतकों की संख्या 800 है, लेकिन निष्पक्ष रिपोर्टों के मुताबिक, यह 2000 से भी ज्यादा हो सकती है.... ।"[11] भा.ज.पा. के अतिरिक्त कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय स्तर की पार्टी है और उसे भी आरोपित करते हुए अरुंधति रॉय लिखती हैं, "1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली में कांग्रेस पार्टी के शासन के दौरान तीन हजार से ज्यादा सिखों का कत्लेआम करवाया गया, जो हर तरह से उतना ही वीभत्स था जितना गुजरात नरसंहार है। उस समय राजीव गांधी ने कहा था, 'जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो जमीन हिलती है। 1985 के चुनावों में कांग्रेस को भरपूर कामयाबी मिली। सहानभूति की लहर जो थी! अभी तक एक भी आदमी दण्डित नहीं हो पाया। ..... चुनावी फायदे के लिए सांप्रदायिकता के पिटारे को खोलना– आप पाएँगे कि कांग्रेस पार्टी वहाँ पहले से ही मौजूद है।"

ये उदाहरण सिर्फ दो दलों के लिए नहीं हैं अपितु इनके जरिये यह स्पष्ट तौर पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि चुनाव जीतने के लिए किस तरह सांप्रदायिक राजनीति की जाती है। जब सांप्रदायिक दंगे होते हैं तो आम आदमी उसका शिकार होता है। कई लोगों की जिन्दगी जाती है, महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार की घटनाएँ सामने आती हैं, मकानों, दुकानों आदि को लूट लिया जाता है, साथ ही छिन जाते हैं उनके रोजगार भी, बस साथ रह जाती हैं कड़वी यादें। इन सभी घटनाओं को 'अफसाना प्रदूषण का..' कहानी अभिव्यक्त करती है। बजरंगी लाल

चौरसिया और शर्फुद्दीन अंसारी की दोस्ती शर्फुद्दीन के मौत के साथ ही खत्म हो जाती है। कमरुद्दीन का रोजगार ही नहीं जाता उसकी पत्नी रोकसनिया के साथ सामूहिक बलात्कार भी होता है। फिर दोनों को अपना कस्बा छोड़ कर दिल्ली पलायन करना पड़ता है और नए परिवेश में जाकर बसने के लिए अलग चुनौतियों का सामना करना। ये महज कुछ पात्रों की बात नहीं है अपितु उस समाज की सच्चाई है, जहाँ सांप्रदायिक घटनाएँ होती हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त कहानियों के उदाहरण और विश्लेषण से हमें साम्प्रदायिक समस्या का परत दर परत पता चलता है। जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण कारण राजनीतिक स्वार्थपूर्ति और सत्ता की भूख दिखती है। राजनीतिक पार्टियाँ अपने हित साधने के लिए किसी भी हद तक जाती हैं। यहाँ तक कि उन्हें दंगे करवाने से भी कोई गुरेज नहीं। राजनीतिक पार्टीयाँ स्वयं को किसी भी खास धर्म का हितैषी क्यूँ न बताएँ, लेकिन उनका उद्देश्य धर्म हित न होकर सिर्फ वोट का ध्रुवीकरण करना होता है, जिससे वे सत्ता और धन पा सकें। ध्यातव्य है, अलग–अलग धर्म के लोग इस वोट के ध्रुवीकरण को स्वार्थपूर्ति हेतु अंजाम देते हैं, यहाँ सिर्फ किसी एक धर्म को आरोपित नहीं किया जा सकता। इन कुकृत्यों में नेता, व्यापारी, भू–माफिया, ढोंगी बाबा आदि सभी की मिली भगत होती है। इस तरह सांप्रदायिक राजनीति के दुष्परिणाम को भी यहाँ देखा गया कि आमजन किस तरह इन परिस्थितियों से जूझते हैं। लूट–पाट, आगजनी, हिंसा और बलात्कार का मंजर अत्यंत ही दारुण और हृदय विदारक होता है, जिसके घाव मानसिक पटल से कभी नहीं मिटते। एक आम जिंदगी अस्त–व्यस्त हो जाती है। इन घटनाओं को रोकने के लिए व्यवस्था में जो अधिकारीगण होते हैं वे भी राजनीतिक प्रपंच के सामने बेवस नजर आते हैं और चाह कर भी न्यायोचित कदम नहीं उठा पाते। कथाकार पंकज मित्र ने सांप्रदायिकता की समस्या के करणों और उसके दुष्प्रभावों को अपने कहानियों के माध्यम से बखूबी दिखाने की कोशिश की है।

सन्दर्भ सूची

1. मित्र, पंकज, *'अफसाना प्रदूषण का...' (क.), 'क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ',* आधार प्र., पंचकूला, संस्करण– 2011, पृष्ठ– 101.
2. कोठारी, रजनी, *'चार बाधाएँ और बीच का रास्ता' (लेख), 'बीच बहस में सेकुलरवाद'* (सं. अभय कु. दुबे), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण– 2005, आवृति– 2009, पृष्ठ– 349.
3. मित्र, पंकज, *'अफसाना प्रदूषण का...' (क.), 'क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ',* आधार प्र., पंचकूला, संस्करण– 2011, पृष्ठ– 106.
4. वही, पृष्ठ– 98.
5. वही, पृष्ठ– 103.
6. वही, पृष्ठ– 103.
7. वही, पृष्ठ– 103.
8. वही, पृष्ठ– 106.
9. मित्र, पंकज, *'हुड़ुकलुल्लु' (क.), 'हुड़ुकलुल्लु',* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण–2008, पृष्ठ– 116.
10. वही, पृष्ठ–117.
11. रॉय, अरुंधति, *'न्याय का गणित',* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र. संस्करण– 2005, आवृति– 2013, पृष्ठ– 166.

****